चंद्र प्रकाश माया

जनम	: 2 जनवरी 1947
आवास	: बी०-104, पुष्पांजलि कुंज, आशियाना, दीघा रोड, पटना-25
सिच्छा	: एम.ए. (हिन्दी)
परकासित किरती	: फूल-पात, तुम्हारे नाम (कविता संकलन)
संपादन	: स्वर-त्रयी
सम्मान	: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा हिन्दी कविता लागी साहित्य सेवा पुरस्कार

इनकर रचना के भासा सरल, सहज आउ सुबोध हे। इनकर गीत मन के बहुत गहराई तक छुअऽ हे जेकरा में बिसेस किसिम के ताजगी हे। गीत-गजल में इनका राएट्रीय ख्याति प्राप्त हो चुकल हे। ई कविता में कवि पर्यावरन के परदूसन से पाठक के अवगत करा रहलन हे।

एगो पेड़ रोप लऽ

फेंकऽ नयँ गंदगी कहूँ इधर-उधर हो भाई,
रखऽ तूँ साफ-सुथरा गउआँ-सहर हो भाई !

पानी में घुले लगल जहर, बदबू भरल हवा,
हरदम बहारते चलऽ डगर-डगर हो भाई !

गर हो सके तऽ तूहूँ एगो पेड़ रोप लऽ,
जयतबऽ उहँइ छँहुरा दिन भर ठहरऽ हो भाई !

मत खेलऽ तू धुआँ से कबहूँ धुआँ समझ के,
ढयतवऽ एक दिन इहे धुआँ कहर हो भाई !

कुदरत से हमनी अगर जे होवित रहम अलग,
बेमार होके जयबऽ बेमौत मर हो भाई !

करिहऽ न गंगा-जमुना के पानी कभी मइला,
एकरे से गाँव-गाँव पहुँचत नहर हो भाई !

पर्यावरन से 'माया' नयँ छेड़-छाड़ करिहऽ,
फटे लगल ओजोन के अब तो कवर हो भाई !

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) धुआँ कउची से निकलऽ हे ?
   (ख) पेड़ रोपेला काहे कहल जा रहल हे ?
   (ग) पानी में जहर कइसे घुल रहल हे ?
   (घ) गाँव-सहर के साफ-सुथरा रखे से का फायदा हे ?
   (ङ) हवा में बदबू कइसे भरऽ हे ?

लिखित :

1. (क) चन्द्र प्रकाश माया के परिचय दऽ।
   (ख) छहुँरा ला का उपाय करे के चाही ?
   (ग) गंगा-जमुना कउन चीज के प्रतीक हे ?
   (घ) पर्यावरन से छेड़-छाड़ कइसे हो रहल हे ?
   (ङ) ओजोन का हे ? एकरा कइसे बचावल जा सकऽ हे ?
   (छ) जब मेघ बरसऽ हे तब का दिरिस नजर आवऽ हे ?

भासा-अध्ययन :

1. पाठ से तीन गो सहचर सबद बतावऽ ।
2. नीचे लिखल सबद कउन समास हे, बतावऽ :—
   इधर-उधर, दिन भर, बेमौत, हरदम, गंगा-जमुना
3. नीचे लिखल सबद से बिसेसन बनावऽ :
   सहर, दिन, बेमार, कुदरत, गाँव

योग्यता-विस्तार :

1. 'पर्यावरन' पर एगो छोटा निबंध लिखऽ।
2. 'पर्यावरन' पर किलास में एगो विचार-गोस्ठी रखऽ।

सब्दार्थ :

बदबू	—	खराब गंध
छँहुरा	—	छाँह
कुदरत	—	ईस्वरीय, प्रकृति
कवर	—	ढक्कन

●●●